

प्रश्न: पूँजीवाद के विकास के विभिन्न चरणों और इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

पूँजीवाद (Capitalism) केवल एक आर्थिक प्रणाली नहीं है, बल्कि यह समाज के सोचने और जीने के तरीके में आया एक बहुत बड़ा बदलाव है। मोटे तौर पर कहें तो यह एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ उत्पादन के साधनों (जैसे- कारखाने, ज़मीन, मशीनें) पर निजी स्वामित्व होता है और मुख्य उद्देश्य 'लाभ कमाना' होता है।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

पूँजीवाद रातों-रात पैदा नहीं हुआ। इसका जन्म मध्यकालीन सामंतवाद (Feudalism) के पतन की राख से हुआ।

- **पुनर्जागरण (Renaissance):** 14वीं से 16वीं शताब्दी के बीच यूरोप में हुए वैचारिक बदलावों ने तर्क और विज्ञान को बढ़ावा दिया। इससे लोगों में व्यापार और नई खोजों की इच्छा जगी।
- **भौगोलिक खोजें:** वास्कोडिगामा और कोलंबस जैसे यात्रियों ने नए समुद्री रास्तों की खोज की। इससे यूरोप का व्यापार केवल स्थानीय न रहकर वैश्विक होने लगा।

2. पूँजीवाद के विकास के प्रमुख चरण

इतिहासकारों ने पूँजीवाद के विकास को मुख्य रूप से चार चरणों में बाँटा है:

(i) वाणिज्यिक पूँजीवाद (Commercial Capitalism: 15वीं से 18वीं सदी)

यह पूँजीवाद का शुरुआती दौर था। इस समय धन का मुख्य स्रोत 'उत्पादन' नहीं बल्कि 'व्यापार' था।

- व्यापारियों ने दूर-दराज के देशों से सस्ते में कच्चा माल खरीदा और उसे ऊँचे दामों पर बेचा।
- इसी दौर में 'ईस्ट इंडिया कंपनी' जैसी व्यापारिक कंपनियों का उदय हुआ।
- राज्य ने व्यापार को संरक्षण दिया, जिसे **वणिकवाद (Mercantilism)** भी कहा जाता है।

(ii) औद्योगिक पूँजीवाद (Industrial Capitalism: 18वीं के अंत से 19वीं सदी)

1760 के आसपास ब्रिटेन में हुई औद्योगिक क्रांति ने सब कुछ बदल दिया।

- अब लाभ केवल सामान बेचने से नहीं, बल्कि मशीनों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्पादन (Mass Production) करने से होने लगा।
- एडम स्मिथ ने अपनी किताब 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में 'अहस्तक्षेप के सिद्धांत' (**Laissez-faire**) की बात की, यानी सरकार को व्यापार में दखल नहीं देना चाहिए।
- इस दौर में 'पूँजीपति वर्ग' (Bourgeoisie) और 'श्रमिक वर्ग' (Proletariat) के बीच की खाई गहरी होने लगी।

(iii) वित्तीय पूँजीवाद (**Financial Capitalism: 19वीं के अंत से 20वीं सदी के मध्य तक**)

जब उद्योगों के पास बहुत अधिक पैसा जमा हो गया, तो वे खुद को चलाने के लिए बैंकों और वित्तीय संस्थानों पर निर्भर होने लगे।

- अब शक्ति कारखानों के मालिकों से निकलकर बैंकों और शेयर बाजार के पास जाने लगी।
- बड़ी-बड़ी कंपनियों ने बाज़ार पर कब्ज़ा (Monopoly) करना शुरू कर दिया। इसे 'एकाधिकार पूँजीवाद' भी कहा जाता है।

(iv) समकालीन या वैश्विक पूँजीवाद (**Contemporary/Global Capitalism: 1945 से अब तक**)

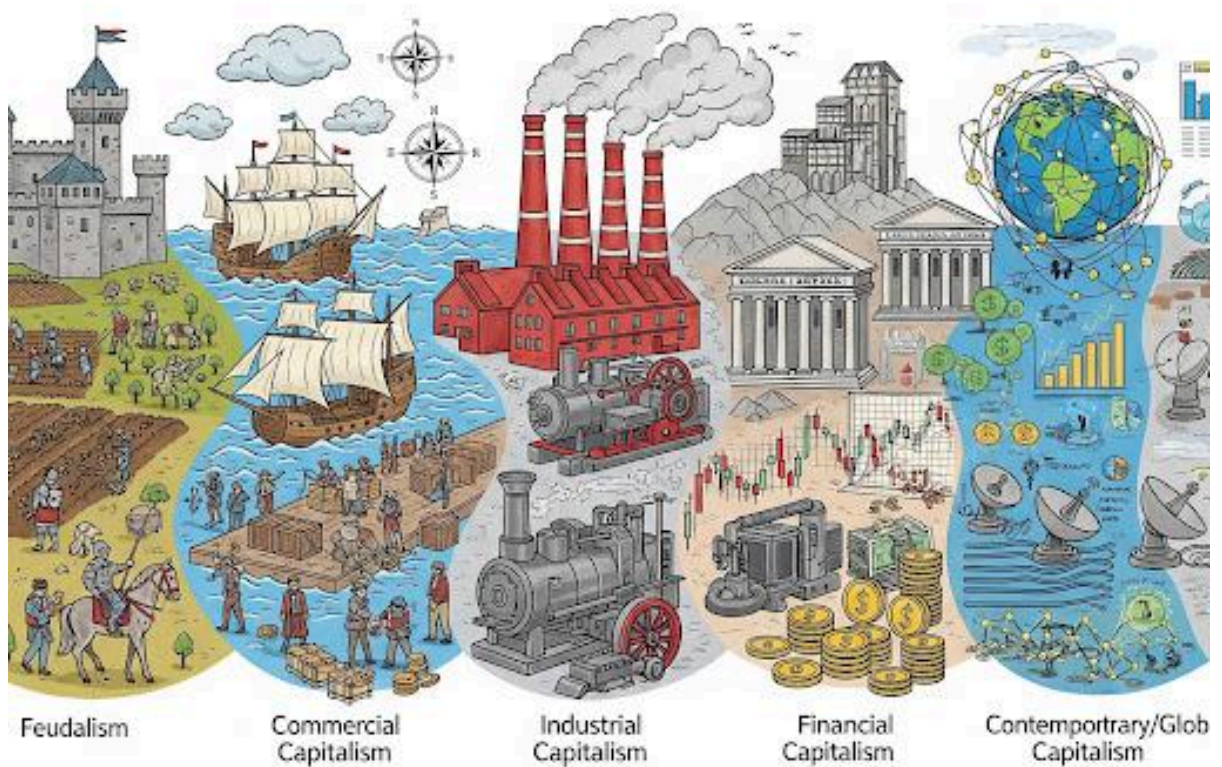
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, विशेषकर 1990 के दशक के बाद, पूँजीवाद पूरे विश्व में फैल गया।

- **भूमंडलीकरण (Globalization):** अब कंपनियाँ किसी एक देश की नहीं रहीं, बल्कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) बन गईं।
- तकनीक, इंटरनेट और डेटा अब नई 'पूँजी' बन गए हैं। इसे अक्सर 'डिजिटल पूँजीवाद' भी कहा जाता है।

निष्कर्ष

संक्षेप में कहें तो, पूँजीवाद ने दुनिया को जहाँ तकनीक और समृद्धि दी है, वहीं इसने असमानता और पर्यावरण जैसी चुनौतियाँ भी पेश की हैं। सामंतवाद से शुरू होकर आज के डिजिटल युग तक, पूँजीवाद ने खुद को समय के अनुसार बार-बार बदला है, और यही

इसकी सबसे बड़ी विशेषता है।



Question: Describe the various stages of the development of capitalism and its historical background.

Answer:

Capitalism is not just an economic system; it is a profound transformation in the way society thinks and lives. Roughly speaking, it is a system where the means of production (such as factories, land, machinery) are privately

owned, and the main objective is to 'earn profit'.

1. Historical Background

Capitalism did not emerge overnight. It was born from the ashes of the decline of medieval Feudalism.

Renaissance: The ideological changes that occurred in Europe between the 14th and 16th centuries promoted reason and science. This sparked a desire for trade and new discoveries among people.

Geographical Discoveries: Travelers like Vasco da Gama and Columbus discovered new sea routes. This caused European trade to become global rather than just local.

2. Major Stages in the Development of Capitalism

Historians have primarily divided the development of capitalism into four stages:

(i) Commercial Capitalism (15th to 18th Century)

This was the initial phase of capitalism. During this time, the main source of wealth was 'trade,' not 'production'.

Merchants bought raw materials cheaply from distant countries and sold them at high prices.

The rise of trading companies like the 'East India Company' occurred during this era.

The state provided protection to trade, which is also known as Mercantilism.

(ii) Industrial Capitalism (Late 18th to 19th Century)

The Industrial Revolution that took place in Britain around 1760 changed

everything.

Profit now came not just from selling goods, but from Mass Production using machines.

Adam Smith, in his book 'The Wealth of Nations,' advocated the 'Laissez-faire' principle (the principle of non-interference), meaning the government should not interfere in business.

The gap between the 'Bourgeoisie' and the 'Proletariat' deepened during this period.

(iii) Financial Capitalism (Late 19th to Mid-20th Century)

As industries accumulated a great deal of money, they began to rely on banks and financial institutions to run themselves.

Power shifted from the owners of factories to banks and the stock market.

Large corporations began to capture the market (Monopoly). This is also known as 'Monopoly Capitalism'.

(iv) Contemporary or Global Capitalism (1945 to Present)

After World War II, especially after the 1990s, capitalism spread across the globe.

Globalization: Companies were no longer confined to one country but became Multinational Corporations (MNCs).

Technology, the internet, and data have now become the new 'capital'. This is often called 'Digital Capitalism'.

Conclusion

In summary, while capitalism has brought technology and prosperity to the world, it has also presented challenges such as inequality and environmental issues. From its origins in feudalism to today's digital age,

capitalism has repeatedly adapted itself according to the times, and this is its greatest characteristic.